

---

# Ribhuproktam Sarvamatmaivanirupanam

---

## ऋभुप्रोक्तं सर्वमात्मैवनिरूपणम्

---

### Document Information

---

Text title : Ribhuproktam Sarvamatmaivanirupanam

File name : RRibhuproktamSarvamAtmaivanirUpaNam.itx

Category : shiva, shivarahasya

Location : doc\_shiva

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | shaNkarAkhyah ShaShThAMshaH | adhyAyaH 18| 28-40||

Latest update : August 5, 2023

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 5, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

ऋभुप्रोक्तं सर्वमात्मैवनिरूपणम्



(सर्वमात्मैव केवलम्)

आत्मैवेदमिदं सर्वमात्मैवाहं न संशयः ।

आत्मैवास्मि परं सत्यमात्मैव परमं पदम् ॥ १८.२८ ॥

आत्मैव जगदाकारं आत्मैव भुवनत्रयम् ।

आत्मैव जगतां श्रेष्ठः आत्मैव हि मनोमयः ॥ १८.२९ ॥

आत्मैव जगतां त्राता आत्मैव गुरुरात्मनः ।

आत्मैव बहुधा भाति आत्मैवैकं परात्मनः ॥ १८.३० ॥

आत्मैव परमं ब्रह्म आत्मैवाहं न संशयः ।

आत्मैव परमं लोकं आत्मैव परमात्मनः ॥ १८.३१ ॥

आत्मैव जीवरूपात्मा आत्मैवेश्वरविग्रहः ।

आत्मैव हरिरानन्दः आत्मैव स्वयमात्मनः ॥ १८.३२ ॥

आत्मैवानन्दसन्दोह आत्मैवेदं सदा सुखम् ।

आत्मैव नित्यशुद्धात्मा आत्मैव जगतः परः ॥ १८.३३ ॥

आत्मैव पञ्चभूतात्मा आत्मैव ज्योतिरात्मनः ।

आत्मैव सर्वदा नान्यदात्मैव परमोऽव्ययः ॥ १८.३४ ॥

आत्मैव ह्यात्मभासात्मा आत्मैव विभुरव्ययः ।

आत्मैव ब्रह्मविज्ञानं आत्मैवाहं त्वमेव हि ॥ १८.३५ ॥

आत्मैव परमानन्द आत्मैवाहं जगन्मयः ।

आत्मैवाहं जगद्भानं आत्मैवाहं न किञ्चन ॥ १८.३६ ॥

आत्मैव ह्यात्मनः स्नानमात्मैव ह्यात्मनो जपः ।

आत्मैव ह्यात्मनो मोदमात्मैवात्मप्रियः सदा ॥ १८.३७ ॥

आत्मैव ह्यात्मनो नित्यो ह्यात्मैव गुणभासकः ।

आत्मैव तुर्यरूपात्मा आत्मातीतस्ततः परः ॥ १८.३८ ॥

आत्मैव नित्यपूर्णात्मा आत्मैवाहं न संशयः ।

आत्मैव त्वमहं चात्मा सर्वमात्मैव केवलम् ॥ १८.३९ ॥

नित्योऽहं नित्यपूर्णोऽहं नित्योऽहं सर्वदा सदा ।

आत्मैवाहं जगन्नान्यदमृतात्मा पुरातनः ॥ १८.४० ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते ऋभुप्रोक्तं सर्वमात्मैवनिरूपणं सम्पूर्णम् ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । शङ्कराख्यः षष्ठांशः । अध्यायः १८। २८-४० ॥

- .. shrIshivarahasyam . shankarAkhyaH ShaShThAMshaH . adhyAyaH 18.  
28-40..


Notes :

Shiva Rahasyam Amsa-06 consists of the 50 Adhyaya-s that comprise the Ribhu Gita.


Selected verses from Ribhu Gita have been compiled here based on similarity of content.

Proofread by Ruma Dewan

---

——  
*Ribhuproktam Sarvamatmaivanirupanam*

pdf was typeset on August 5, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

